MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
UGC Approved Sr.No.41012
Vidyawarta®
February 2019
Special Issue
0186

41

किशोरावस्था एवम बालिका शिक्षा

डॉ. संजीव कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग(बी.एड),
कु. मायावती राजकीय महिला स्नात्कोत्तर
महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

सारांश

उक्त शीर्षक हेतु शोधार्थी ने अपने अध्ययन को निम्न प्रमुख शीर्षकों में विभक्त कर गहन मीमांशा की है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने किशोरावस्था के आयु संबंधी अर्थ और मनोवैज्ञानिकों के द्वारा दिये गए तथ्यात्मक कथनों एवम परिभाषाओं को सम्मलित किया है। किशोरावस्था जो कि परिवर्तन की अवस्था भी मानी जाती है की विभिन्न विशेषताओं एवम समस्याओं की व्याख्या की गई है। शोधार्थी ने अध्ययन को विशिष्ट रूप में बालिकाओं के संदर्भ में केंद्रित किया गया है जहां बालिकाओं को किशोरावस्था में कौन कौन सी समस्याएं उत्तपन्न होती हैं तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु किस प्रकार की शिक्षा उपलब्ध कराई जाए इस विषय की सारगर्भित व्याख्या की गई है, जो कि मात्र शोधार्थी के विचार नही हैं बल्कि प्रामाणिक शोध निष्कर्षो के परिणामों पर आधारित अध्ययन का निष्कर्ष है। शोधार्थी ने किशोरावस्था एवम बालिका शिक्षा शीर्षक को निम्न शीर्षकों में विभक्त किया गया है।

१. किशोरावस्था का प्रत्यय एवम परिभाषाएँ
२. किशोरावस्था की विशेषताएँ
३. किशोरावस्था एवम बालिका शिक्षा

मुख्य बिंदु– किशोरावस्था, समस्याएं, शारीरिक विकास,सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, पाठ्यक्रम, शिक्षा

परिचय

किशोरावस्था को अंग्रेजी भाषा में अडोलसेंसे (Adolescence) कहते हैं । यह शब्द लेटिन भाषा की अडोलेसीरे (Adolescere) क्रिया से बना है जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना (To grow towards maturity).

ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन (blair, jones, and simpson) अनुसार किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में प्रारंभ होता है और प्रोढ अवस्था के आरंभ में समाप्त होता है।

जरशिएल्ड (Jershield) के अनुसार किशोरावस्था वह समय हैं जिसमें विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।

स्टैनले हॉल (Stanley hall) के अनुसार किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है

स्पष्ट है कि किशोरावस्था विकास की वह अवस्था है जो तारुण्य से प्रारंभ होती है और परिपक्वता के उदय होने पर समाप्त होती है

सामान्य रुप से यह अवस्था १२ वर्ष की आयु से १८ वर्ष की आयु तक मानी जाती है, किंतु विभिन्न देशों में व्यक्तिगत भेद, संस्कृति, जलवायु आदि के कारण किशोरावस्था के विकास की अवधि में कुछ अंतर पाया जाता है । गर्म प्रदेशों में शीत प्रधान प्रदेशों की अपेक्षा किशोरावस्था का आरंभ शीघ्र होता है ।बालकों की तुलना में बालिकाओं में किशोरावस्था का आरंभ लगभग २ वर्ष पूर्व हो जाता है ।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को दो भागों में विभाजित किया है–

(१) पूर्व–किशोरावस्था (Early Adolescence) १२ से १६ वर्ष की आयु तक

(२) उत्तर किशोरावस्था (Later Adolescence) १७ से १९ वर्ष की आयु तक।

१७ वर्ष आयु को दोनों का विभाजक बिंदु बताया गया है। जैसा कि हरलॉक (Hurlock) ने कहा है, पूर्व और उत्तर बाल्यकाल के मध्य की विभाजन रेखा लगभग १७ वर्ष की आयु के पास है।

उत्तर– बाल्य काल तथा किशोरावस्था के

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
UGC Approved Sr.No.41012
Vidyawarta®
February 2019
Special Issue

बीच की अवधि को पूर्व किशोरावस्था माना जाता है । इस समय बालक पूर्ण किशोर नहीं बनता, किंतु उसके व्यवहार, मनोवृति तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देने लगता है। पूर्व किशोरावस्था को एक बड़ी उलझन की अवस्था कहा गया है, क्योंकि इस समय प्राय: माता– पिता, अभिभावक तथा शिक्षक उसे बात–बात पर डांटते, रोकते या टोकते रहते हैं। वह सदा उलझनपूर्ण स्तिथि में रहता है कि वह क्या करे।

पूर्व किशोरावस्था को अत्यंत द्रुत एवम तीव्र विकास का काल भी कहा जाता है। शारीरिक विकास के साथ साथ इस समय विकास के सभी पक्षों में तेजी आ जाती है।

क्रो और क्रो (Crow and Crow) के अनुसार किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है (Youth represents the energy of the present and the hope of future)

Hadow Committee Report (हैडो कमेटी रिपोर्ट) में लिखा है — ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आराम हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है । यदि इस ज्वार का बाढ़ के समय ही उपयोग कर लिया जाए एवं इसकी शक्ति और धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाए, तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।

शैक्षिक दृष्टि से भी किशोरावस्था को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अत: किशोरावस्था की विशेषताओं तथा इस अवस्था में बालिका शिक्षा के स्वरुप पर विचार करना शिक्षा मनोविज्ञान के शोधकर्ता के लिए आवश्यक है।

किशोरावस्था की विशेषताएं–

किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या हेतु बिग्गे व हंट (Bigge and Hunt) ने लिखा है–किशोरावस्था को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है– परिवर्तन। परिवर्तन शारीरिक, समाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

(१) शारीरिक विकास –

किशोरावस्था को शारीरिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल में किशोरियों में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते है जो यौवन आरंभ होने के लक्षण होते हैं। इस अवस्था में किशोरियां स्त्रीत्व को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होती हैं। किशोरावस्था में भार तथा लंबाई में तीव्र वृद्धि होती है, शारीरिक ढांचे तथा मांसपेशियों में दृढ़ता आती है । किशोरी के वक्षस्थल व कूल्हे विकसित होने लगते हैं तथा मासिक धर्म प्रारंभ हो जाता है।वे अपने शरीर, रंग रूप तथा स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग रहती हैं साथ ही साथ किशोरियां अपनी आकृति को नारी सुलभ आकर्षण प्रदान करने की इच्छुक रहती हैं ।

(२) मानसिक विकास–

किशोरावस्था में मानसिक योग्यताओं का भी विकास होता है । कल्पना, स्मृति, दिवास्वप्नों की बहुलता, तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता अधिक विकसित हो जाती है। इस अवधि में किशोरियों में परस्पर विरोधी मानसिक दर्शाएं परिलक्षित होने लगती हैं। मानसिक जिज्ञासा का विकास हो जाता है। वह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में रुचि लेने लगती है।

(३) स्थिरता तथा समायोजन का अभाव –

किशोरावस्था में किशोरियों की मन: स्थिति शिशुओं के समान अस्थिर हो जाती है । बाल्यावस्था में आई स्थिरता समाप्त होने लगती है तथा किशोरियां पुन: शिशु के समान अस्थिर मन वाली हो जाती हैं । इसीलिए किशोरावस्था को शैशवावस्था की पुनरावृत्ति भी कहा जाता है। इस अवस्था में व्यवहार में इतनी तेजी से परिवर्तन होते हैं कि किशोरियों का व्यवहार उद्विग्न सा रहता है। उनके विचार क्षण– प्रतिक्षण परिवर्तित होते रहते हैं। परिणाम स्वरुप वे अन्य व्यक्तियों तथा वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव करती हैं।

(४) व्यवहार में भिन्नताएं–

किशोरियों में संवेगों की प्रबलता होती है। संवेगात्मक आवेश में वे कभी कभी असम्भव तथा असाधारण लगने वाले कार्यों को भी कर डालते हैं। भिन्न–भिन्न अवसरों पर उनके व्यवहार भिन्न– भिन्न दिखाई देते हैं। वे कभी अदम्य उत्साह से युक्त परंतु

कभी बिल्कुल हतोत्साहित, कभी अत्यन्त क्रियाशील परंतु कभी अत्यन्त काहिल दिखाई देतीं है।

(५) रुचियों में परिवर्तन तथा स्थायित्व–

किशोरावस्था के प्रारंभिक वर्षो में किशोरियों की रुचियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है परंतु बाद के वर्षों में उनकी रुचियों में स्थायित्व आने लगता है। पत्र– पत्रिकाएं, कहानियां, नाटक, उपन्यास आदि पढ़ना, रेडियो सुनना, सिनेमा, शरीर को आकर्षक बनाने के लिए अलंकृत करना, विषमलिंगी की ओर आकर्षित होना किशोरियों की रुचियाँ होती है।

(६) कामशक्ति की परिपक्वता–

किशोरावस्था की संभवत: सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता काम इंद्रियों की परिपक्वता तथा कामशक्ति का क्रियाशील होना है। शैशवावस्था का दबा हुआ काम आवेग, जो बाल्यावस्था में सुप्त रहता है, पुन: जाग्रत हो जाता है। किशोर– किशोरियों में तथा किशोरियां –किशोरों में विशेष रुचि लेने लगती हैं।

(७) समूह को महत्व–

किशोरियां अपने समूह तथा सखी– सहेलियों को अपने परिवार, अध्यापक तथा विद्यालय से अधिक महत्व देती हैं। उनके अधिकांश कार्य तथा व्यवहार समूह से प्रभावित होते हैं। वे अपने समूह के दृष्टिकोण को अधिक अच्छा समझती हैं तथा उनके अनुरुप ही अपने व्यवहारों, आदतों,रुचियों तथा इच्छाओं आदि में परिवर्तन लाती हैं

(८) स्वतंत्रता व विद्रोह की भावना–

किशोरावस्था में किशोरियों में स्वतंत्रता की भावना अत्यंत प्रबल होती है। किशोरियां अपने से बड़ों के आदेशों, परिवार व समाज की परंपराओं, रीति– रिवाजों अथवा अंधविश्वासों को सहज ही स्वीकार नहीं करती है। वह अपना स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। बिना तर्क के वे किसी बात को स्वीकार करना नहीं चाहती। यदि उन पर प्रतिबंध लगाया जाता है तो वे विद्रोह करने का प्रयास करती हैं। वास्तव में किशोरियां प्रौढ़ों को अपने मार्ग की बाधा समझती हैं । उनके विचार में प्रौढ़ व्यक्ति उनकी स्वतंत्रता का हैंनन करने का प्रयास करते रहते हैं।

(९) वीर पूजा की भावना–

किशोरियों में वीर पूजा की प्रगति बढ़ जाती है। इतिहास, साहित्य तथा वास्तविक जीवन के नायक–नायिकाओं, महापुरुषों नेताओं अथवा वीरों के आदर्श गुणों से प्रभावित होकर वे उनके प्रति श्रद्धा तथा भक्तिभाव रखतीं हैं तथा उनके आदर्शों की अनुयायी होकर उनकी पूजा करने लगती हैं । इसीलिए किशोरावस्था को वीर पूजा (Age of Hero Worship) की अवस्था भी कहा जाता हैं

(१०) स्वाभिमान की भावना–

किशोरावस्था में किशोरियों में स्वाभिमान तथा आत्म– गौरव की भावना प्रबल होती है वे छोटी–छोटी बातों से अपने को अपमानित तथा तिरस्कृत महसूस करती हैं। स्वाभिमान को ठेस लगने के कारण कभी–कभी वे घर से भाग जाती व आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करने का प्रयास भी करती हैं

(११) अपराध प्रवृति का विकास–

इच्छापूर्ति न होना, निराशा, असफलता, प्रेम का अभाव, नवीन अनुभवों की लालसा आदि के कारण किशोरावस्था में अपराध प्रवृति की भावना विकसित होने लगती है। वास्तव में किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का एक नाजुक समय होता है तथा अधिकांश अपराधियों के अपराधी जीवन का प्रारंभ प्राय किशोरावस्था की विषम परिस्थितियो के परिणामस्वरुप होता है।

(१२) व्यवसाय की चिंता–

किशोरावस्था में किशोर अपने भावी व्यवसाय के सम्बंध में चिंतित रहते हैं। किसी व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश पाने तथा उसमें उन्नत्ति करने से सम्बंधित बातों की किशोर प्राय: आपस में चर्चा करते रहते हैं।अपनी पसंद के व्यवसाय के अनुरूप ही किशोर पाठ्य विषयों का चयन करते हैं।

(१३) बहिर्मुखी प्रवर्ति –

किशोरावस्था में किशोर पुन: बहिर्मुखी हो जाता है। उसकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक रुचियों का विकास व्यापक क्षेत्र में होता है। वह अपने चारों ओर के वातावरण तथा क्रियाओं में रुचि लेता है। विद्यालय तथा समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में वह भाग लेना

चाहता है। बर्हिमुखी प्रवर्ति के कारण उसमें आत्मनिर्भरता, आत्म नियंत्रण, सहयोग, अनुशासन,परोपकार की भावना आदि गुणों का विकास होता है।

(१४) परमार्थ की भावना–

शैशवावस्था की स्वार्थ–भावना, किशोरावस्था में परमार्थ भावना अर्थात दूसरों का उपकार करने की भावना का रूप ले लेती है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किशोरों ने इस भावना से प्रेरित होकर राष्ट्र और समाज के लिए तथा उसकी बुराइयों को दूर करने के लिए मृत्यु तक को चुनोती दे दी।

(१५) आंत्मप्रेम–

प्रारम्भ में यह भावना आत्म प्रेम के रूप में दिखाई देती है। इस अवस्था में किशोरियाँ अपने को यथा संभव आकर्षक बनाने का प्रयास करती हैं।अपने को ही देखती, संवारती रहती है तथा अपने समान किसी को नहीं समझती और अपने से ही प्रेम करती है फ्रायड (Sigmund Freud) ने इस स्थिति को नार्सिज्म (narcissism) कहा है।

किशोरावस्था और शिक्षा–

किशोरावस्था में लड़कियों के शरीर एवं मन मस्तिष्क में क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं। शारीरिक परिवर्तनों में यौन शक्ति के उदय और मानसिक परिवर्तनों में संवेगों की तीव्रता उनके व्यवहार को विचलित कर देती है। यही उनके व्यवहार की नई दिशा का प्रमुख काल होता है। यदि इस समय सही निर्देशन एवम उचित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध हो तो उनका व्यक्तित्व सकारात्मक दिशा में उन्मुख होता है। शिक्षा मनोविज्ञान के विद्वानों ने किशोरावस्था में लड़कियों की शिक्षा का विधान कुछ विशेष प्रकार से करने को आवश्यक बताया है।

शिक्षा के उद्देश्य–

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अपनी परिवर्तनीय एवम विचित्र आयु में लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था निम्न उद्देश्यों को समक्ष रखकर की जानी चाहिए।

१. शारीरिक विकास का उद्देश्य
२. मानसिक विकास का उद्देश्य
३ संवेगात्मक विकास का उद्देश्य
४.समाजिक विकास का उद्देश्य
५.मूल्य निर्माण एवं नैतिक विकास का उद्देश्य
६.योग्यतानुसार व्यावसायिक विकास हेतु निर्देशन
७.राष्ट्रीय भावना के विकास का उद्देश्य
८.धार्मिक विकास के लिए शिक्षा
९.व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था

किशोरावस्था और शिक्षा की पाठ्यचर्या–

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से किसी भी आयु में लड़कियों की शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता, रुचि एवं योग्यता के आधार पर करना चाहिए । उनकी दृष्टि से लड़कियों की शिक्षा की पाठ्यचर्या में निम्नलिखित विषय एवं क्रियाओं को समावेशित करना चाहिए।

१. शारीरिक विकास के लिए शरीर विज्ञान का ज्ञान एवं खेलकूद एवं व्यायाम की क्रियाएं।

२.मानसिक विकास के लिए भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवम गणित विषय और [illegible] एवम कार्य करके सीखने की क्रियाएं।

३. [illegible] शक्तियों के निर्माण के लिए साहित्य, कला एवम संगीत विषय और साहित्यिक एवम सांस्कृतिक क्रियाएँ तथा समाज सेवा कार्य सम्मलित किये जायें।

४. सामाजिक विकास के लिए सामूहिक शिक्षण, सामूहिक कार्य, साहित्यिक एवम सांस्कृतिक क्रियाएँ, स्काउटिंग एवम गाइडिंग आदि को पाठ्यक्रम में सम्मलित किया जाना चाहिए ।

५ नैतिक विकास हेतु भाषा, साहित्य, इतिहास तथा धार्मिक एवंम नैतिक शिक्षा को सम्मलित किया जाना चाहिए

६.व्यावसायिक विकास हेतु पूर्ण व्यावसायिक निर्देशन एवम परामर्श के साथ साथ उचित व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।

७. समाज सेवा और राष्ट्र भक्ति की भावना के विकास हेतु इतिहास, समाज सेवा, राष्ट्रीय पर्व आयोजन एवम नाटक मंचन आदि क्रियाओं को पाठ्क्रम में स्थान दिया जाए।

किशोरावस्था एवम शिक्षण विधियां–

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किशोरावस्था में लड़कियों की बुद्धि और मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास हो जाता है। इस अवस्था में वह किसी भी तथ्य को तर्क के आधार पर स्वीकार करते हैं। इनमें समस्या समाधान की योग्यता का भी विकास हो जाता है। साथ ही वे स्वाध्याय हेतु भी समर्थ हो जाती हैं इसलिए इस स्तर पर पाठ्‌–विषयों की प्रकृति के अनुसार विविध विधियों का प्रयोग करना चाहिए जैसे

१.आगमन–निगमन विधि
२.विश्लेषण–संश्लेषण विधि
३.समस्या–समाधान विधि
४.प्रायोगिक शिक्षण विधि
५.प्रोजेक्ट शिक्षण विधि
६.अन्वेषण विधि
७.स्वाध्याय विधि

किशोरावस्था और अनुशासन—

[illegible] दण्ड के प्रति तो वे विद्रोह तक कर देती है। अतः इस स्तर पर अनुशासन की स्थापना के लिए किशोरियों के साथ बड़ी सावधानी से व्यवहार करना चाहिए। प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। दण्ड का प्रयोग तभी किया जाए जब अपराध सीमा से बाहर हो।

किशोरावस्था और विद्यालय —

किशोरावस्था में लड़कियां बहुत संवेदनशील होती हैं अतः उन्हें विद्यालय में सभी सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। पाठ्यचारी क्रियाओं के साथ साथ सह पध्याचारी क्रियाओं के लिए भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए। विद्यालय व्यवस्था में उनका सहयोग लेना चाहिए, इससे उनके आत्मसम्मान एवम आत्मनिर्भरता दोनों भावों की संतुष्टि होती है।

उपसंहार —

डॉ. स्टैनले हॉल का प्रचलित कथन किशोरावस्था बड़े ही संघर्ष, तनाव, तूफान एवम विरोध की अवस्था है निःसंदेह आयु के उस विशिष्ट काल की व्याख्या यूँ करता है मानो गागर में सागर भर दिया हो या ज्यों कुछ शब्दों में साहित्य लिख दिया हो। मनोविज्ञान के विद्वानों के लिए मानव व्यवहार के इस पड़ाव का अध्ययन एवम इसपर भविष्यकथन सदैव कठिन कार्य रहा है क्योंकि डॉ. बिग्गे और हंट के अनुसार किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है और परिवर्तनीय विषय पर स्थिर मत सम्भव हो पाना असंभव है।

किशोरावस्था की जटिल स्तिथि में शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना और संवेदनशील कार्य हो जाता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों को किशोरावस्था के परिवर्तनों को नियंत्रित एवम सही दिशा में निर्देशित करने के लिए उपर्युक्त वर्णित शिक्षा व्यवस्था पर विचार किया जाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

संदर्भ ग्रंथ

१. [illegible]

२. [illegible]

३.शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा डॉ.मालती श्रीवास्तव : आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद (१५९–१६६)

४. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान रू डॉ. एस. पी. गुप्ता और डॉ. अलका गुप्ता ए शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (१००–१२१)

५. शिक्षा मनोविज्ञान एवम मापन : डॉ. रमन बिहारी लाल और डॉ. सुरेश चंद जोशी ए रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ (८५–१००)

६. एडवांस एजुकेशनल साइकोलॉजी : डॉ. एस.के.मंगल ए पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

७. दी साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन : मार्टिन लांग,क्लेयर वुड ए अरियल पब्लिकेशन

८.शिक्षा मनोविज्ञान : डॉ. एच. एस. सिन्हा और डॉ. रचना शर्मा ए आर.लाल.प्रकाशन, मेरठ (३५–४४)